AMFU, Ranchi
Ref.: 6/5 (48) AAS/Ranchi
Mob.: 9340446914

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा

कृषि मौसम विज्ञान विभाग
बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, कांके, राँची

मौसम खेती परामर्श बुलेटिन **बोकारो** जिले के लिए

IMD, New Delhi
Date: 16.06.2026
Email: amfuranchi@gmail.com

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त अगले पाँच दिनों (16 जून से 20 जून) का मौसम पूर्वानुमान

	16 जून	17 जून	18 जून	19 जून	20 जून
वर्षा (मिलीमीटर)	4.0	3.0	4.0	4.0	4.0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.)	39	39	37	35	35
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.)	27	27	26	25	24
आकाश में बादल की स्थिति	हल्के बादल छाए रहेंगे	हल्के बादल छाए रहेंगे	हल्के बादल छाए रहेंगे	हल्के बादल छाए रहेंगे	हल्के बादल छाए रहेंगे
सापेक्षिक आर्द्रता (प्रतिशत)	35-75	30-69	36-70	40-75	35-75
हवा की गति (कि. मी. प्रति घंटा)	8	8	10	8	8
हवा की दिशा	दक्षिण-पश्चिम की ओर से	दक्षिण-पश्चिम की ओर से	दक्षिण-पश्चिम की ओर से	पश्चिम की ओर से	पश्चिम की ओर से

मौसम पूर्वानुमान पर आधारित कृषि सलाह

मौसम मुख्यतः गर्म और शुष्क रहेगा, तापमान में कमी होने की संभावना है। कुछ स्थानों पर गरज-चमक और तेज हवाओं के साथ हल्की वर्षा की संभावना है।

बुवाई और रोपाई के लिए अनुमानित बारिश का फ़ायदा उठाएँ, खेत की मेड़ों और बारिश का पानी जमा करने वाले ढाँचों को मज़बूत करें ताकि नमी बनी रहे। निचले खेतों में पानी की निकासी का सही इंतज़ाम करें ताकि बारिश के बाद कुछ समय के लिए पानी न भरे। खाद के नुकसान को कम करने के लिए बारिश के बाद या जब अगले 24 घंटों तक बारिश की उम्मीद न हो, तब खाद डालें। वर्षा जल संचयन के लिए अपने खेत के निचले भाग में छोटे -छोटे गढ्ढे (डोभा) का निर्माण करें।

अरहर	अरहर की बुआई के लिए खेत की तैयारी करें। बीज किसी प्रमाणित श्रोत से ही खरीदें। बीजों को बोने से पहले अरहर के लिए उपयुक्त राईजोवियम तथा फास्फोरस में घुलनशील बैक्टीरिया से उपचार करें तथा अच्छे अंकुरण के लिए खेत में पर्याप्त नमी होनी आवश्यक है। इस उपचार से बीजों के अंकुरण तथा उत्पादन में वृद्धि होती है। अरहर की उन्नत किस्में – एल.आर.जी.-41, बिरसा अरहर-1, नरेन्द्र अरहर-1 एवं 2, बहार, आई.सी.पी.एच.-2671 इनमे से किसी एक किस्म का चुनाव करें।
धान	नर्सरी की देखभाल जारी रखें और जहाँ मिट्टी में पर्याप्त नमी हो, वहाँ 20-25 दिन के पौधों की रोपाई का काम शुरू करें। जिन इलाकों में रोपाई के लिए पानी की कमी है, वहाँ नर्सरी के पौधों की देखभाल करें और समय से पहले ट्रांसप्लांटिंग न करें। अगर बुवाई में और देरी हो जाए, तो कम और मध्यम अवधि वाली धान की किस्मों का इस्तेमाल करें।
मक्का	मिट्टी में मौजूद नमी का इस्तेमाल करके बुवाई का काम पूरा करें और यह पक्का करें कि पानी की निकासी ठीक हो ताकि जड़ों के आस पास पानी जमा न हो। फॉल आर्मीवर्म के प्रकोप पर नज़र रखें; पौधों के ऊपरी हिस्सों की नियमित रूप से जाँच करें। बारिश के बाद निराई - गुड़ाई से जुड़े ज़रूरी काम और खरपतवार हटाने का काम करें। नाइट्रोजन का टॉप ड्रेसिंग तभी करें जब मिट्टी में पर्याप्त नमी हो।
सब्जी	**यदि जल प्रबंधन ठीक से न किया जाए, तो बारिश के बाद जल्दी बोई गई सब्जियों की फसलों में मुरझाने की समस्या दिखाई दे सकती है। इसे लिए 1.5 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लिन + 25 ग्राम कॉपर ऑक्सीक्लोराइड को 10 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।** **टमाटर की फसल में जल-जमाव और जड़ों की बीमारियों से बचने के लिए पानी की निकासी का इंतज़ाम करें। ज़्यादा नमी से अर्ली ब्लाइट, लेट ब्लाइट और बैक्टीरियल विल्ट जैसी बीमारियाँ हो सकती हैं; इसलिए फसल की नियमित निगरानी करें। पौधों को गिरने से बचाने और बीमारियों का असर कम करने के लिए उन्हें सहारा दें।** भिंडी में येलो वेन मोज़ेक वायरस को नियंत्रित करने के लिए नीम का तेल @ 2 मिली / 1 लीटर पानी के साथ सुबह के समय छिड़काव करें या इस रोग को नियंत्रित करने के लिए पीले चिपचिपे जाल का उपयोग करें।
जलवायु प्रबंधन	भारत मौसम विज्ञान विभाग के अनुमानों के अनुसार, जून और 2026 के दक्षिण-पश्चिम मॉनसून के दौरान सामान्य से कम बारिश की संभावना है। ऐसे में, धान की पैदावार बनाए रखने के लिए जलवायु-अनुकूल फसल और पानी के प्रबंधन के तरीके अपनाना ज़रूरी होगा। किसानों को सलाह दी जाती है कि वे कम समय में तैयार होने वाली और सूखे को सहने वाली धान की किस्में उगाएं। साथ ही, मौसम से जुड़े जोखिमों को कम करने के लिए एक ही बार बुवाई करने के बजाय अलग-अलग समय पर बुवाई या सामुदायिक नर्सरी का तरीका अपनाएं। वैकल्पिक गीलापन एवं सुखापन' और शुष्क प्रत्यक्ष बीजित धान' तकनीकों से पानी के इस्तेमाल की क्षमता को बेहतर बनाया जा सकता है। सूखे को सहने की क्षमता और पौधे की मज़बूती बढ़ाने के लिए, शुरुआती खाद के तौर पर फॉस्फोरस (75 kg प्रति हेक्टेयर), आयरन (30 kg प्रति हेक्टेयर) और सिलिकॉन (200 kg प्रति हेक्टेयर) का इस्तेमाल करें। बाली बनने की शुरुआत में अतिरिक्त पोटेशियम (20–25 kg प्रति हेक्टेयर) देने से तनाव सहने की क्षमता और पानी के इस्तेमाल की क्षमता बेहतर हो सकती है। वहीं, मिट्टी में बोरॉन (2 kg प्रति हेक्टेयर) डालने से गर्मी और नमी की कमी के बावजूद परागकणों की जीवनक्षमता, स्पाइकलेट की फर्टिलिटी और दाने भरने की प्रक्रिया ठीक बनी रहती है। इन उपायों को समय पर अपनाने से सामान्य से कम बारिश वाले मॉनसून की स्थिति में पैदावार में होने वाले संभावित नुकसान को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

हरी खाद	**माध्यम तथा निचली खेतों में हरी खाद के लिए सनई, ढैंचा की बुवाई कर सकते हैं। सनई की बीज दर 60-70 और ढैंचा की 50-60 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर है। अच्छे अंकुरण के लिए खेत में पर्याप्त नमी होनी आवश्यक है। ये धान के रोपाई तक तैयार हो जाएंगे और पोषक प्रदान करेंगे।**
मडुआ	**मडुआ (रागी) के फसल लेने हेतु किसान भाई खेत की तैयारी करें, 3 से 4 बार क्जीत की अच्छि तरह जुताई कर लें तथा पाटा चला दें। गोबर की सड़ी खाद 2 टन प्रति एकर के दर से अच्छी तरह मिला दें। मडुआ टाँड ज़मीन में बोई जाने वाले फसल है इसलिए जल निकासी का अच्छी तरह प्रबंध करें।**

अनुराग सनाडया
रिसर्च एसोसिएट

डॉ. रमेश कुमार
नोडल आफिसर